शकुन

रेटिंग:

विवरण: ?????? ???? ??? ????? ?? ??? ???? ???? ????, ???? ??????? ???????? ?? ???? ?? ??????? ???? ?? ?? ????????? ??????

श्रेणी: पाठ › इस्लामी मान्यताएं › ईश्वर का एक होना (तौहीद)

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022
अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

आवश्यक शर्तें

·अल्लाह पर विश्वास (2 भाग)।

उद्देश्य

·यह समझना कि आधुनिक समाज में शकुन कितने प्रचलित हैं।

·शकुन का सटीक अर्थ जानना।

·सामान्य शकुन और उनकी संभावित उत्पत्ति का संक्षिप्त विवरण देना।

·शकुन पर इस्लामी आदेश देना।

·शकुन में विश्वास करने की प्रायश्चित प्रार्थना करना।

अरबी शब्द

·*?????* - प्रभुत्व, नाम और गुणों के संबंध में और पूजा की जाने के अधिकार में अल्लाह की एकता और विशिष्टता।

·*?????* - एक ऐसा शब्द जिसका अर्थ है अल्लाह के साथ भागीदारों को जोड़ना, या अल्लाह के अलावा किसी अन्य को दैवीय बताना, या यह विश्वास करना कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य में शक्ति है या वो नुकसान या फायदा पहुंचा सकता है।

·?????? - पक्षी की चाल या चीजों के माध्यम से शकुन मानना।

शकुन को भविष्य की घटना को दर्शाने वाले संकेत माना गया है। कुछ शकुन को अच्छे भाग्य का संकेत माना जाता है जबकि अन्य को आने वाले बुरे वक्त का संकेत माना जाता है। अच्छे और बुरे के नाम पर कई अंधविश्वास दुनिया में फैले हुए हैं, और एक मुसलमान को इस बात की स्पष्ट समझ होनी चाहिए कि यह उनकी आस्था को कैसे प्रभावित करता है। शकुन व्यर्थ की छोटी चीजें नहीं हैं जिन पर लोग विश्वास करते हैं; बल्कि, ये मूर्तिपूजा और गैर-इस्लामी विचारों पर आधारित हैं। यह ध्यान रखना चाहिए कि मूर्तिपूजा रातों-रात प्रकट नहीं हुई। बल्कि, ऐसे अंधविश्वास पहले जड़ पकड़ते हैं और फिर मूर्तियों, मानव देवताओं और सितारों की पूजा के द्वार खोलते हैं। धीरे-धीरे लोग अपने पैगंबरों की शुद्ध शिक्षाओं (तौहीद) को भूल जाते हैं और उन्हें अंधविश्वास से मिला देते हैं। इस्लाम ऐसे सभी दरवाजे बंद कर देता है और हर उस अंधविश्वास को जड़ से उखाड़ देता है जो तौहीद में सरल और शुद्ध विश्वास को नष्ट कर सकता है।

कई व्यापक शकुन के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

(1) दर्पण के टूटने का अर्थ है सात साल की बदकिस्मती: दर्पण के आविष्कार से पहले, मनुष्य अपने प्रतिबिंब को पूल, तालाबों और झीलों में देखता था। यदि छवि विकृत होती थी, तो इसे आसन्न आपदा का संकेत माना जाता था। इसलिए प्रारंभिक मिस्रियों और यूनानियों के 'अटूट' धातु दर्पण उनके जादुई गुणों (जैसे कि बिना विकृति के छवि दिखाने का गुण) के कारण मूल्यवान वस्तुएं होती थीं। कांच के दर्पण आने के बाद, रोमनों ने टूटे हुए दर्पण को दुर्भाग्य का संकेत माना, क्योंकि प्रत्येक टुकड़ा उनकी छवि को कई गुणा कर के दिखाता था। निर्धारित दुर्भाग्य की अवधि रोमन विश्वास से आई थी कि मनुष्य का शरीर हर 7 साल में शारीरिक रूप से फिर से जीवंत हो जाता है, और वह वास्तव में एक नया आदमी बन जाता है।

(2) लकड़ी पर खटखटाना: प्राचीन मान्यता है कि आत्माएं या तो पेड़ों में रहती हैं, या उनकी रक्षा करती हैं। यूनानियों ने ओक के पेड़ की पूजा की क्योंकि यह ज्यूस के लिए पवित्र था, सेल्ट्स पेड़ की आत्माओं में विश्वास करते थे, और दोनों का मानना था कि पवित्र पेड़ों को छूने से सौभाग्य प्राप्त होगा। आयरिश विद्या का मानना है कि 'लकड़ी को छूना' लेहपरकॉन को थोड़े से भाग्य के लिए धन्यवाद देने का एक तरीका है। मूर्तिपूजकों ने भी सुरक्षात्मक वृक्ष आत्माओं पर समान अन्धविश्वास रखा। चीनी और कोरियाई लोगों ने सोचा कि प्रसव के दौरान मरने वाली माताओं की आत्माएं पास के पेड़ों में रहती हैं। एक अन्य अन्धविश्वास में लकड़ी के ईसाई क्रॉस को 'सौभाग्य' माना जाता है, हालांकि यह संभवतः पहले के मूर्तिपूजक प्रथाओं से ईसाईयों को मिला है।

(3) लापरवाही से नमक छिड़कना दुर्भाग्य माना जाता है, इसलिए इससे निपटने के लिए नमक को सावधानी से बाएं कंधे के ऊपर से गिराया जाता है। नमक के बारे में अंधविश्वास बाइबिल के समय का है जब नमक एक अत्यधिक बेशकीमती वस्तु थी। यह महंगा था, भोजन को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण था, और अक्सर मुद्रा के स्थान पर इसका इस्तेमाल किया जाता था। इसलिए नमक छिड़कना लगभग एक अपवित्र अपराध माना जाता था, और शैतान की चालों को आमंत्रित करने वाला माना जाता था। अपने कंधे के ऊपर से नमक फेंकना शैतान को दूर रखने का एक तरीका माना जाता है। नमक या तो शैतान को अंधा करने वाला माना जाता है ताकि वह आपकी गलती न देख सके, या जब आप गंदगी साफ कर रहे हों तो वो आप पर हावी न हो सके।

(4) 13 तारीख को शुक्रवार: पश्चिमी संस्कृति ने सैकड़ों वर्षों से 13 तारीख के शुक्रवार को विशेष रूप से अशुभ माना है। अमेरिका में कई ऊंची इमारतों में 13वीं मंजिल को 14 वीं मंजिल कहा जाता है। सप्ताह के छठे दिन को अक्सर अशुभ माना जाता है, जैसा कि संख्या 13 को माना जाता है। इसका संयोजन, जो वर्ष में एक से तीन बार होता है, अनिवार्य रूप से इस प्रबलित अंधविश्वास की ओर ले जाता है।

> इस दिन लोग यात्रा करने से बचते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि 13 नंबर को पितृसत्तात्मक धर्मों के पुजारियों द्वारा जानबूझकर बदनाम किया गया था क्योंकि यह स्त्रीत्व का प्रतिनिधित्व करता था। तेरह एक वर्ष में चंद्र (मासिक धर्म) चक्रों की संख्या के अनुरूप थे, और यह संख्या प्रागैतिहासिक देवी-पूजा संस्कृतियों में पूजनीय थी। हिंदुओं का मानना था कि 13 लोगों का एक जगह इकट्ठा होना अशुभ होता है। इस अंधविश्वास को प्राचीन स्कैंडिनेवियाई लोग भी मानते थे। माना जाता है कि बाइबिल की कई नकारात्मक घटनाएं शुक्रवार को हुईं, जिनमें ईडन के बगीचे से आदम और हव्वा को निकाला जाना, महान बाढ़ की शुरुआत और यीशु का कथित रूप से क्रूस पर चढ़ना शामिल है।

शकुन पर इस्लामी आदेश

इस्लाम के आने से पहले, अरब के लोग जिस दिशा में पक्षी उड़ते थे उसे अच्छे या बुरे शकुन का संकेत मानते थे। यदि कोई व्यक्ति यात्रा पर निकलता और देखता कि पक्षी अपनी बाईं ओर उड़ रहा है, तो वह घर लौट आता है। इस प्रथा को तियारा कहा जाता था । प्राचीन अरबों ने पक्षियों को अपना शकुन माना, लेकिन अन्य देशों ने किसी और चीज़ को। मूल रूप से वे सभी समान हैं। इसलिए, तियारा शकुन में एक सामान्य विश्वास को दिखाता है और उन सभी में अंतर्निहित शिर्क एक ही है। इस्लाम इस तरह के अंधविश्वासों को नहीं मानता क्योंकि वे दिल से अल्लाह की एक बहुत ही महत्वपूर्ण पूजा (विश्वास) करते हैं। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा,

“तियिारा शरि्क है, और जो इसे करता है वह हम में से नहीं है। अल्लाह पर नरि्भर रहने से अल्लाह इससे (इसकी मान्यता से) छुटकारा दलिाएगा।” (अल-तरि्मज़ी)

पैगंबर के साथयिों में से एक ने कहा कि कुछ लोग पक्षी के शकुन का पालन करते हैं। पैगंबर ने कहा,

“यह कुछ ऐसा है जसिे आपने स्वयं बना लयिा है, इसलएि इसे स्वयं को रोकने न दें।” (सहीह मुस्लमि)

पैगंबर का मतलब यह था कि ऐसे शकुन केवल मनुष्य की कल्पना में हैं; इसलएि, आपने जसिकी योजना बनाई थी उसे इसकी वजह से न रोकें। अल्लाह ने पक्षी के उड़ने के तरीके को अच्छे या बुरे भाग्य का शकुन नहीं बनाया।

पैगंबर के साथयिों ने शकुन के नषिेध को गंभीरता से लयिा। इक्रीमा ने कहा कि एक बार वे पैगंबर के साथी इब्न अब्बास के साथ बैठे थे, और एक पक्षी उनके सरि के ऊपर से उड़ा और चल्लिाया। एक आदमी ने कहा, 'अच्छा! अच्छा!' लेकनि इब्न अब्बास ने उसे बताय कि, 'इसमें न तो अच्छाई है और न ही बुराई।'

ये अंधवशि्वासी मान्यताएं अल्लाह की रचना के लएि अच्छा या बुरा भाग्य नही है। साथ ही, दुर्भाग्य का डर और सौभाग्य की आशा अल्लाह के अलावा कसिी और से नहीं करनी चाहएि। ऐसी मान्यताएं यह भी मानती हैं कि भवषि्य की घटनाओं की भवषि्यवाणी करना संभव है, जबकि अल्लाह ही है जो जानता है कि भवषि्य में क्या होगा। अल्लाह ने क़ुरआन में पैगंबर से कहा कि “आप कह दें कि “यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता, तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। (क़ुरआन 7:188)

अल्लाह के दूत ने कहा,

“तियिारा शरि्क है, तियिारा शरि्क है” (अबू दाऊद)

एक अन्य हदीस में उन्होंने कहा,

“जसि कसिी ने भी तियिारा की वजह से कोई काम रोका, उसने शरि्क कयिा” (अल-तरि्मज़ी, इब्न माजा)

जब पैगंबर साथयिों ने पूछा कि इसका प्रायश्चति क्या है, तो पैगंबर ने उन्हें यह कहने का नरि्देश दयिा:

अल्लाह-हुम्मा ला ख़ैरा इल्ला ख़ैरुक, वा ला तयरा इल्ला तयरुक, व ला इलाहा इल्ला ग़ैरुक

“ऐ अल्लाह, तेरी भलाई के सिवा न तो कोई भलाई है और न ही तेरे शकुन के सिवा कोई शकुन, और तेरे सिवा कोई ईश्वर नही है।” (अहमद, तबरानी)

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/88

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।